



Desh-videsh Ke Jeev-jantuon Ki Lok Kathayen - Vol. 3 देश-वदिश के जीव-जन्तुओं की कथाएं (भाग -3)



Author: Santhini Govindan सांथनी गोवनिदन

Format: Paperback

ISBN: 8178060582

Code: 9233D

Pages: 24

Price: Rs. 36.00 US\$ 3.00

Publisher: Unicorn Books

Usually ships within 15 days

पशु-पक्षी मानव जीवन के अभिन्न अंग हैं। तनकि वचिर कीजएि यदहिमें चड्डियों का चहचहाना, पपीहे की पीहू-पीहू और कोयल की कूक सुनने को न मलिती, मयूर का नृत्य, वन में वचिरण करते मृग देखने को न मलिते, तो हमारा जीवन कतिना नीरस होता। आपको यह जानकर शायद हंसी आए कि इन पशु-पक्षियों को लेकर मनुष्य ने कैसी-कैसी कल्पनाएं कीं। उदाहरण के लिए बाघों के शरीर पर काली धारियां कैसे बनीं? मगरमच्छ की पीठ खुरदरी क्यों होती है? कृत्ता अजनबियों को देखकर भौंकता क्यों है? आदि-आदि। कालान्तर में यही कल्पनाएं लोक-कथाओं का धारण करती गईं। आज विश्व के अनेक देशों जैसे- भारत, वयितनाम, अफ्रीका, अमेरिका, फलिस्तीन आदि में इन पशु-पक्षियों के वषिय में अनेक प्रकार की लोककथाएं प्रचलति हैं। उन्हीं में से कुछ प्रमुख कथाएं चुनकर इस पुस्तक में समाहति की गई हैं।

About Unicorn Books

Unicorn Books publishes an extensive range of books that are both affordable and high-quality.